।। तत्त भेद को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ तत्त भेद को अंग लिखंते ||

|| चोपाई ||

प्रम तत्त का जाणे भेव || सो जन साधु जुग में देव ||
देव लोक सुं देवत आवे || प्रम तत्त सोई जन पावे ||१||

जो साधु परमतत्त का भेद जानते है वेही जगतमे परात्परी परमात्मा अमरपुरुष देव है । अन्य सभी साधू काल का चारा है । जो देवताओके लोक मे देवताओके सुख लेनेमे उदास रहते, दु:खी रहते,अतृप्त रहते,तथा उन सुखो मे उन्हे ग्लानी आती ऐसे जीव जब देवता लोक से मृत्युलोक मे मनुष्य देह मे जन्मते तब विष्णुतक के सुखो के परेका सुख खोजते वेही साधू परमतत्त पाते ।||१||

करमी जीव मिनष गत होई || प्रम तत्त नही पावे सोई ||
रूप रेख देखण के मांई || दिष्ट मुष्ट मे आवे नाही ||२||

कर्मी जीव याने नरकीय लोकसे नरकीय दु:ख भोगके जो जीव मनुष्य गती मे आते वे कर्मी जीव पाँच इन्द्रीयोके व काम,क्रोध,लोभ,मोह,मत्सर,अहंकार इन कर्मोमे मन व पाँच इन्द्रीयोसे सुखो की तृप्ती करनेकी अभीलाषा रखते वह जीव परमतत्त कभी नही पाते । उस जीव को परमतत्त सुख पाँच इन्द्रीयोके सुखोसमान रुपरेखा में देखणे नही आता,याने उसके द्रिष्ट मे नही आता इसलिये उसके मुठ्ठीमे पकडे नही जाता याने समजमे पकडे नही जाता इसलिये कर्मी जीव इस परमतत्त को पकड नही पाते ।||२||

शब्द दिष्ट मे देख्यां जावे || से सबदां मे साध बतावे ||
अन्छर मन्डे ना काना लागे || सो पद मिल्यां भ्रम सब भागे ||३||

त्रिगुणी मायाके साधू जो कागज पे लिखे जाते,कानसे सुनने के बाद समजमे आते ऐसे शब्दो का वेद,शास्त्र,पुराण,कुराण का ज्ञान बताते,उससे जीवोको पाँचो विषयो के सुख मिलते परन्तु जीवको ये पांचो विषयोके अतृप्त सुखो से जीव मे परमसुख पाऊँगा या नही पाऊँगा यह भ्रम बना रहता वही परमतत्त का साधु परमतत्त ग्यान बताते वह परमत्त का शब्द कागज पे बावण अक्षरो समान मांडे नही जाता व चर्मकर्णोसे वह सतशब्द सुणाई दिया नही जाता ऐसे परमतत्त का शब्द घटमे प्रगट होनेपे जीव को महासुख प्राप्ती होने के प्रती एक भ्रम नही रहता,सब मिट जाते ।||३||

भ्रम क्रम रेण नही पावे || ज्युं अगनी सब पूस जलावे ||
बावण अखर जब लग जाणे || भ्रम क्रम कर बहोत बखाणे ||४||

इस परमतत्त के प्रतापसे जीव के भ्रम याने झुटे त्रिगुणी माया मे तृप्त सुख समजना व कर्म याने विषयवासना की कर्म क्रियावो मे यह साधू नही रह पाते । जैसे अग्नी कचरा जलाकर राख कर देते वैसे परमतत्त भ्रम व कर्म को राख कर देता। बावन अक्षरो के ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती,अवतार आदीयो के ग्यानके शरण मे जबतक ग्यानी,ध्यानी,

साधू,नर–नारी रहते तब तक तृप्त सुख पाने के लिये अनेक भ्रमीत याने झुटे उपाय व कालके मुखके कर्म कांड बखाणते ।।।४।।

बावण अखर हे जुग माही ।। सातूं मात लगे ये नाही ।।
बावण अन्छर हे विस्तारा ।। पंन्डित पढे सकळ सब सारा ।।५।।

सतशब्द यह बावन अक्षर व अक्षरोपे लगनेवाले सातो मात्रा के परे है । कारण सतशब्द को सातो मात्रा नही लगती। जबतक शब्दो को सातो मात्रा लगती तब तक शब्द बावन अक्षरो का शब्द है। वह सतशब्द नही है। ये वेद,शास्त्र,पुराण यह बावण अक्षरोका विस्तार है यही विस्तार सभी पंडीत,ग्यानी,ध्यानी पढते है। ।।५।।

बावण अन्छर सब कोई खोजे ।। प्रम तत्त कहूं नई सूजे ।।
पद बिन ग्यान सबे नर अंधा ।। उलटा पढया गलामे फंदा ।।६।।

सभी पंडीत,ग्यानी,ध्यानी,नर–नारी बावन अक्षरोमे परमतत्तका सुख खोजते बावन अक्षरोमे परमतत्त का सुख है नही,उसमे विषय वासनाओका सुख है इसलिये ग्यानी,ध्यानी,नर–नारी को परमतत्त का सुख कैसे रहता यह समजता नही । इसकारण इनको परमतत्त खोजने का सुजता नही । इस परमतत्त के ज्ञान बिना सभी अंधे है । परमतत्त बिना माया की कर्म विधी करनेसे कालका फंदा जीव के गले मे पडता ।।।६।।

मन सूं पवन सकल सूं न्यारा ।। सो पद लखे सन्त जन सारा ।।
पवना सूं न्यारा होई ।। पूरा सन्त लखे जन कोई ।।७।।

यह परमतत्त मन व पवन से न्यारा है । यह परमतत्त मन व श्वास के क्रियासे नही पाये जाता। इसलिये यह परमतत्त सभी संत नही पाते । यह पवन से न्यारा परमपद जो पुर्ण संत है वही पाते ।।।७।।

ग्यानी पन्डित पढ पढ भरमाना ।। प्रम तत्त का म्रम न जाणा ।।
पढ पढ ग्यान बतावे सोई ।। आपन समझे भूला दोई ।।८।।

ग्यानी,पंडीत वेद,शास्त्र,पुराण,पढ–पढकर त्रिगुणी माया के सुखो मे भर्म गये। इन्होने परमतत्त का मर्म नही जाणा । यह ज्ञानी पंडीत पढ पढकर वेद,पुराण का ज्ञान बताते । इन्हे त्रिगुणी माया के सुखोमे काल कैसा है यह समजा नही इसलिये ये खुद भी परमतत्त के सुख को भूल गये व जगत भी इनके साथ रहकर परमतत्त के सुख भुल गया ।।।८।।

प्रम तत्त कूं सार बतावे ।। सो पद छांड आन कूं स्यावे ।।
पंडित का कहा कहिये ग्याना ।। छाड पेड डाळा कूं जाणा ।।९।।

ये ज्ञानी ध्यानी परमपद सार है करके बताते परन्तु परमपद छोडकर काल के माया पद को पकडते। पंडीतोके ज्ञानको क्या कहना ये पेडके जडको छोडकर डालियाँ और टहनियाँ पकडते । ।।९।।

पढ पढ बेद जन्म यूं जाई ।। प्रम तत्त वे लखे न भाई ।।

उद बुद कंवळां कहां लग भाखूं ।। द्रब दिष्ट की देखू आंखू ।।१०।।

इन पंडीतोका वेद,पुराण पढ पढकर जन्म ऐसाही व्यर्थ जाता ये परमतत्त कभी नही पाते । जो मै अदभूत परमतत्त दिव्य द्रिष्टसे घटमे देखता हुँ । वह इन्हें कहा तक व कैसे समजाऊँ ।१०।

सुणता मरम भ्रम सब जावे ।। ज्यूं प्यासे कूं नीर पिलावे ।।
बिन समज्या पीवे नही कोइ ।। कहा कहूँ इच रज ओ होई ।।११।।

यह परमतत्तका मर्म सुनतेही जीवके सभी भ्रम मिट जाते । जैसे प्यासेको पानी पिलाते ही उसकी प्यास बुज जाती वैसे परमतत्त समजतेही भ्रम मिट जाते फिर भ्रम कभी नही उपजते । परन्तु प्यास बुजानेके लिये पानी पिना पडता यह समजता नही इसलिए प्यासा बनके पडा रहता ऐसे परमतत्त के शिवाय भ्रम जाते नही यह समजता नही इसलिए वेद , शास्त्र,पुराण के करणीयो के भ्रमोमे तृप्त सुख खोजते पंडीत पडे रहते । प्यासे को पानी से प्यास बुजती यह जैसे यह समजता नही इसका जैसे जगतको आश्चर्य होता वैसे परमपद से भ्रम मिटता यह पंडीतो को समजता नही इसका परमतत्त के संतो को आश्चर्य होता ।।।११।।

नारी पुरष गम अेक ठामा ।। बिन शब्दा नही परस्या जामा ।।
प्रम तत्त यूं सब मे होई ।। सत्तगुरू बिना लखे नही कोई ।।१२।।

सभी स्त्री पुरुषोके देह मे परमतत्त एक सरीखा ओतप्रोत है यह सतगुरुके बिना समजता नही, सतगुरु मिलनेपेही परमतत्त सभी स्त्री पुरुषोमे आदीसे ही ओतप्रोत है यह समजता ।।।१२।।

गुरू किरपा कर हम कूं दीया ।। सिष आधीन बहोत होय लीया ।।
जुग मे हम लीया अवतारा ।। प्रम तत्त का करूं पसारा ।।१३।।

मै सतगुरु के बहोत आधीन होकर मैने सतगुरु की कृपा मिलाई तब मुझपे गुरु ने कृपा की । मुझे जगत मे मनुष्य अवतार मिला व साथ मे सतगुरुका परमतत्त मिला । अब मै परमतत्त के भेद जगतमे प्रसार करुंगा ।।।१३।।

मेरा शब्द अगम की बाणी ।। समजा हंस मिलेगा आणी ।।
तत्त शब्द हम जब ही पाया ।। गुरू किरपा सुं भेव लखाया ।।१४।।

मेरा शब्द मेरी बाणी अगम याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव जानते नही ऐसे देश की बाणी है । जो मेरी बाणी समजेंगे वे मेरे पास आयेंगे । इस तत्त शब्द का भेद मुझे गुरु कृपासे समजा तब परमतत्त घटमे पाया ।।।१४।।

आतम मध अगाध ज्युं बाणी ।। समज्या हंस मिलेगा आंणी ।।
प्रथम रसणा जब लिव लागे ।। भागे भ्रम आतमा जागे ।।१५।।

आत्मामे परमात्मा है उस परमात्माकी अगाध बाणी है व अगाध बाणी जो समजेगा वही

मुझे आकर मिलेगा । प्रथम रसनासे लीव लगती । आत्मा जागृत होती व भ्रम सभी भाग जाते । ।।१५।।

बेधे मूळ सूरत घर लावे ।। मन पवना के गांठ घुळावे ।।
मन सो पवन मिले घर आई ।। नख चख रूंम लखे सब मांई ।।१६।।

मुळ शब्द को ढुंढकर सुरत नाभी घर आती,मन व श्वास एक ही घरमे आकर एक होकर मिलते । व शब्द नख चखमे रोम रोम मे मालुम पड्ता ।।।१६।।

रसणा डोर लगे एक धारा ।। नांभ कंवळ मे करे पसारा ।।
निस दिस रटे एक मन होई ।। कंठ कंवळ छेदे जन सोइ ।।१७।।

एक धार रसना चलती । वह रसना शब्द का नाभ कमल मे पसारा करती । सभी निस दिन एक मन से रटन करते । तब संत कंठ कमळ को छेदन करता ।।।१७।।

मुख मिश्री मन माहे लखावे ।। ज्यूं ज्युं रटे मन घर आवे ।।
सो गुरूदेवजी भेद बताया ।। जो कुछ दिष्ट मुष्ट मे आया ।।१८।।

मनको मिश्री के समान सुख मुख मे आता । जैसे जैसे रटता वैसे मन घर मे सुख आता । जो गुरुदेवजी ने भेद बताया वह सब मुझे दृष्टीसे दिखाई दिया ।।।१८।।

गद गद बाणी हुवे प्रकासा ।। कंठ कंवळ ज्यां जीव निवासा ।।
कंठ कंवळ दळ च्यारज कहिये ।। जीव पुरष का बासा लहिये ।।१९।।

गद गद वाणी होकर प्रकाश हुवा । कंठ कमळ मे जीव बैठा हुवा दिखाई दिया कंठमे चार पाकलीका कमळ है । उस चार पाकळी के कमळ मे जीव का रहने का वास है ।।।१९।।

सो हम भळे देखिया भाई ।। जीव जुगत कर बेठा मांई ।।
पांचू साव प्रख ले सोई ।। जिभ्या स्वाद कंवल मुख होई ।।२०।।

वह वास हमने देखा वहाँ जीव युक्तीसे बैठा है । वहाँ वह जो खाता है उसके अलग अलग सभी स्वाद जीभसे लेता है ।।।२०।।

सब रस स्वाद जीव रस लेवे ।। आप अघाय पांच कूं देवे ।।
पांचू पोख मिले ज्यां त्यांही ।। पच पच मरे जीतसी नाई ।।२१।।

सभी स्वाद जीव लेता। प्रथम जीव लेता व फिर सभी पाँच आत्मा को देता। पाँचो ।।२१।।

पांख पांख मे बिंवरो भाई ।। बिष कूं छाड अमीरस खाई ।।
कहो इम्रत क्या कहिये सोई ।। ता का भेव बताओ मोई ।।२२।।

पांख पांख मे-----

विषय रसोको त्यागकर अमृत खाता । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले अमृत क्या है इसके भेद मै तुम्हे बतावो ।।।२२।।

साधाँ संग ग्यान सुण लीजे ।। इम्रत नांव निसो दिन पीजे ।।
संगत इम्रत ग्यान बिचाऱ्या ।। अनंत कोट साधु जन ताऱ्यां ।।२३।।

साधुके संगमे ज्ञान सुणें व नामरुपी अमृत हर पल पिओ । सतसंगत याने साधुओ का ज्ञान यही अमृत है । इसी अमृतसे करोड साधू जन भवसागर से तिरे ।।।२३।।

ग्यान बमेख बुध तब आवे ।। सत संगत गुरू देव मिलावे ।।
संगत कर गुरू देवजी पावे ।। गुरू समरथ गोर्वीद मिलावे ।।२४।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ग्यान विवेक बुध्दी तब आती जब गुरुदेव की सतसंगत मिलती। गुरुदेवजी की संगत कर समर्थ गुरुदेव गोंविद को मिला देते है।२४।

सत संगत सब मे सिर धारा ।। खान पान बिसरावत सारा ।।
पांचू अंग पलटे सोइ ।। निस दिन जे सत संगत होई ।।२५।।

सतसंगत सभी माया की संगतो मे श्रेष्ठ संगत है । यह जग के खाने पिनेके सभी स्वाद भुला देती है । निस दिन जो संगत करते है उनके पांचो विषय विकार के अंग संगत बदल देती है । ।।२५।।

संगत मुक्त मोख की दाता ।। माया जाल मिटे सब ताता ।।
सो संगत वो केसी कुवावे ।। माया टळे ब्रम्ह बर पावे ।।२६।।

सतसंगत यह परममुक्ती,मोक्ष की दाता है। इससे माया जाल सब मिट जाता है,इससे माया टलती व ब्रम्हपती मिलता। यह संगत सत संगत है बाकी संगत सत संगत नही है ।।।२६।।

संगत जुग मे बोहली कहिये ।। चोर जार साहा पन्डित लहिये ।।
च्यारूं संगत अे जुग लहिये ।। इन च्यारूं सुं वा न्यारी कहिये ।।२७।।

जगतमे संगत बहोत प्रकार की है । चोर,व्यभीचारी,साहुकार,पंडीत ऐसे निच उंच मोटा मोटी चार प्रकार की संगत जगत मे है । इन चारो संगत से सत संगत न्यारी है ।।।२७।।

निस दिन रहे मगन मन माता ।। नेह चल चित्त काहुं नही जाता ।।
केणी नही सुणी नेह आवे ।। सो सबदां कर साध बतावे ।।२८।।

उस संगत मे मन हरपल सुख मे मग्न रहता व चित्त निश्चल रहता,विषय वासनामे नही फिरता,यह बात कहने तथा सुणने से नही समजती यह बात होनेसे समजती । यह बात जिस साधुको हुई वेही शब्दों मे बता सकते ।।।२८।।

पन्डित लखे न ग्यानी कोई ।। पढ पढ जन्म बिगोवे दोई ।।
मत वादी मत कूं नित ठाणे ।। प्रम तत्त का मरम न जाने ।।२९।।

इस सुख को पन्डीत तथा ग्यानी भी लखते नही । ये पंडीत,ग्यानी पुराण पढ पढकर जन्म बिघाड देते वैसेही जो मतवादी होते वे अपने मतमे ही मगन रहते वे भी परमतत्त का मर्म कभी नही जानते ।।।२९।।

।। इति तत्त भेद को अंग संपूरण ।।